संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - ३२ ● ०७ अगस्त २०१८ श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

स्वामी सेवानन्द ओ३माश्रित स्मृति दिवस उमड़ा जनशैलाव

लगभग चालीस गाँव के लोगो ने लिया भाग

स्वामी सेवानन्द ओ३माश्रित श्री जिन्हें सेवा में ही आनन्द मिलता हो जिन्होंने सेवा को ही अपना धर्म माना स्वामी जी विहार प्रान्त के रहने वाले थे बाल्काल में ही शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त महर्षि देव दयानन्द की विचार धारा से प्रभावित होकर युवावस्था में ही सन्यास ग्रहण कर लिया और निकल पड़े वैदिक प्रचार के लिए। यह उद्‌बोधन आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धीरज सिंह जी ने मिलक रामपुर में दूर–दूर से शोभायात्रा में आये ग्रामवासियों को दिया जो दूर–दूर से अपने ट्रेक्टर ट्राली में भरकर भाग लेने आये थे। संबोधित किया और कहा शाहजहाँपुर बरेली और मिलक रामपुर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। और इन क्षत्रों में गाँव–गाँव में घूमकर वैदिक प्रचार किया और ग्रामवासियों को संगठित कर आर्य समाज की स्थापना की स्वामी जी का स्वाभाव बच्चों के प्रति बड़ा अद्‌भुत था वे उन्हें एकत्रित करके आर्यसमाज के सिद्धान्तों की जानकारी देते और आर्यवीरदल की साखाओं में ले जाकर आर्यवीर बनाते थे जिसके कारण आस–पास के ग्राम में उनकी प्रसिद्धि हो गयी थी स्वामी जी की विशेषता यह था कि जिस घर में भोजन करते उन्हें यज्ञोपवीत पहनाते थे और दूसरी बार का निमन्त्रण ले लेते थे। स्वामी जी जिस परिवार में दुबारा जाते यदि वहाँ यदि यज्ञोपवीत नहीं मिलता तो वे भोजन नहीं करते थे यही कारण था कि ग्राम के लोगों में वे इतने प्रिय हो गये कि गाँव के लोगों में उनके प्रति श्रद्धा का भाव बन गया था। यही कारण है कि लोग उनकी मृत्यु के उपरान्त उनकी पुण्यतिथि को बड़ी श्रद्धा के साथ मनाते हैं और लगभग चालीस पचास गाँव के लोग उनकी पुण्य तिथि पर भव्य शोभा यात्रा

डॉ. धीरज सिंह, सभा प्रधान

निकालते हैं वास्वत में अपने नाम को सार्थक करते हुए लगभग १२० वर्ष की आयु में संसार से विदा हुए लेकिन जाते–जाते अपने पीछे इतने बड़े संगठन को खड़ा कर दिया। सभा प्रधान जी ने कहा मेरा दुर्भाग्य रहा इतने वर्षों से आर्य समाज में होने के बाद भी ऐसे दिव्य पुरूष के दर्शन नहीं कर पाया। आज मैं इस कार्यक्रम में भाग लेकर अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूँ और ऐसे अद्‌भुत सन्यासी को अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। इस अवसर पर श्री ईश्वरी प्रसाद जी श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी (सभा प्रधान), अमरीश आर्य (सभा प्रधान सम्भल) जयदेव सिंह (जिला सभा मुरादाबाद) आचार्य चन्द्रदेव जी, विजय पाल आदि महानुभाव की उपस्थिति रही शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम की समाप्ति हुए।

शेष पृष्ठ ५ पर

आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज रूड़की रोड मुजफ्फर नगर में ऋग्वेद पारायण दिनांक 18, 19 एवं 20 अगस्त 2018

आर्य समाज अहाता ओलिया एवं आर्य स्त्री समाज अहाता ओलिया द्वारा ऋग्वेद पारायण यज्ञ दिनांक 18,19 व 20 अगस्त 2018 को आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज रूड़की रोड, मुजफ्फर नगर में होगा, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अन्तरंग बैठक एवं कार्यकर्ता सम्मेलन दिनांक 20.08.2018 को दिन में 2.00 बजे होगी।

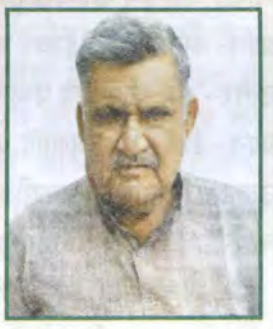

–: निवेदक :–

सत्येन्द्र आर्य (प्रधान) अरूण कुमार (कोषाध्यक्ष) अरविन्द कुमार (मंत्री)

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, मुजफ्फर नगर

सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सहर्ष अवगत कराया जा रहा है अपने–अपने आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम उत्साह और भव्यता के साथ सम्पन्न करायें।

सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित पूर्ण विवरण सभा कार्यालय को भेजें जिससे आर्यमित्र में प्रकाशित किया जा सके। **स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** सभा मंत्री

सम्पर्क – ६८३७४०२१६२ ● व्यवस्थापक – ६३२०६२२२०५ हरीश कुमार शास्त्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

पर्यावरण समस्या से जूझता आज का मानस जन

बहुत पुरानी बात नहीं है, जब भारत जैसे दक्षिणी गोलार्ध के देशों के अमीर लोग अप्रैल बीतते–बीतते यूरोप जाने की तैयारी करने लगते थे। भारत में चलने वाली लू को बर्दाश्त करने की बजाय वे यूरोप के सुहाने ठंडे मौसम में कहीं ज्यादा रहात महसूस करते थे। पर इन दिनों अचानक ही यूरोप के मौसम का समीकरण बदल गया है। वह भी उस समय, जब सावन आते–आते हमें भीषण तापमान से राहत मिल गई है। परेशान करने वाली उमस जरूर जगह–जगह है, लेकिन बहुत ज्यादा तापमान अब कहीं नहीं है। लेकिन यूरोप का मौसम अचानक ही झुलसाने वाला हो गया है। पिछले हफ्ते ब्रिटेन और स्पेन समेत कई देशों में कुछ जगहों का तापमान ४७ डिग्री सेल्सियस को पार कर गया था। आशंका यह है कि इस हफ्ते यह ४८ डिग्री सेल्सियस को पार कर सकता है। यह वही तापमान है, जो हमारे यहां कुछ जगहों पर मई–जून में होता है और तब हम उसे भीषण गरमी कहते हैं। ऐसा सिफ कुछ देशों में नहीं, तकरीबन पूरे यूरोप में हो रहा है। यहां तक कि अपनी सर्दी के लिए प्रसिद्ध स्वीडन में भी। यहाँ की पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊंची–चोटी का ग्लेशियर इतना पिघल गया है कि यह अब स्वीड की सबसे ऊँची चोटी नहीं रह गई।

यूरोप की इस ताजा गरमी का तात्कालिक जिम्मेदार तो अफ्रीका से आ रही गरम हवाओं को ठहराया जा रहा है, लेकिन ज्यादातर वैज्ञानिक यह मान रहे हैं कि ग्लोबल वार्मिंग ने यूरोप में दस्तक दे दी है। इससे हम यह न मानें कि यह सिर्फ यूरोप की समस्या है। यह समस्या किसी न किसी रूप में पूरी दुनिया को परेशान कर रही है। मान लीजिए कि हाल–फिलहाल यह समस्या यूरोप तक सीमित रहती है, तब भी दुनिया इसके अवसर से बच नहीं पाएगी। ग्लेशियर के पिघलने से पानी अंततः समुद्र में पहुंचेगा और समुद्र का जल स्तर बढ़ने से कई दीपों के डूबने का खतरा पैदा हो जाएगा। इस जिहाज से यूरोप की यह गरमी पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चेतावनी भी है।

इस गरमी से यूरोप के लोग इसलिए भी परेशान हैं कि इतनी गरमी में जीने का उनका कोई अनुभवन नहीं। हमारे यहां तो इतना तापमान हर साल होता है, इसलिए हम इसके अभ्यस्त हैं। हमने अपनी शैली भी इसी हिसाब से बना ली है। बावजूद इसके कि मौसम के चरम पर पहंचने जैसे खबरें हमारे देश से आती हैं, वैसी यूरोप से नहीं आ रहीं। हमारे यहां जिस तरह मई–जून के महीने में लू से मरने वालों के आंकड़े जारी होने लगते हैं, वैसे आकड़े वहां से नहीं आ रहे। अभूतपूर्व गरमी वहां के लोगों को खासा परेशान कर रही है, लेकिन वे अपने–अपने तरीके से इससे जूझ रहे हैं। कहीं लोग दिन का ज्यादातर समय स्विमिंग पूल में गुजार रहे हैं, तो कहीं सड़कों, फुटपाथों और सार्वजनिक जगहों पर फव्वारे लगा दिए गए हैं, ताकि लोग गरमी के प्रकोप से खुद को बचा सकें। यूरोपीय देशों की सरकारों से लेकर स्थानीय निकाय तक लगातार गरमी से बचाव की हिदयतें जारी करने में जुटे हुए हैं। लोगों को मौसम की मार से बचाया जा सके, इसके लिए तरह–तरह के संसाधन झोंक दिए गए हैं। इस लिहाज से देखें, तो यूरोप की इस गरमी से सीखने के लिए बहुत कुछ है। ये सारे उदाहरण बताते हैं, कि पर्यावरण से खिलवाड करना कितना महंगा पड़ गया है।

एक समय था कि हम प्रकृति के साथ रहते और स्वस्थ रहते पर्यावरण भी हमारा हमें अनुकूल रहता हम भी पर्यावरण की रक्षा करते क्योंकि पर्यावरण शुद्ध है तो हम स्वस्थ्य है कभी प्यास लगती तो कुंए का पानी अंजली से उठाकर पी लिया करते और दूसरों के लिए प्याऊ लगवाते है लेकिन पानी शुद्ध न होने के कारण खरीदना पड़ता है, और वह बोतल साथ रखनी पड़ती है लेकिन वह दिन दूर नहीं कि वायु दुषित हो जायेगी तो एक ऑक्सीजन सिलेण्डर भी साथ रखना होगा आज हमारी सबकी जिम्मेदारी बनती कि पर्यावरण की सुरक्षा करें यदि हमने पर्यावरण को दूषित कर दिया तो वह दिन दूर नहीं कि एक पानी की बोतल और एक ऑक्सीजन सिलेंडर लिए लोग नजर आयेंगे।

– सम्पादक

गतांक से आगे ..... सत्यार्थ प्रकाश

अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न– वेदों में जो अनेक देवता लिखे हैं उसका क्या अभिप्राय है?

उत्तर– देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं जैसी कि पृथिवी, परन्तु इस को कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। देखो! इसी मन्त्र में कि 'जिस में सब देवता स्थिति हैं, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है।' यह उनकी भूल है जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं। परमेश्वर देवों का देव-होने से महादेव इसीलिए कहाता है कि वही सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयकर्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है।

जो 'त्रयस्त्रिंशत्त्रिंशता०' इत्यादि वेदों में प्रमाण हैं इस की व्याख्या शतपथ में की है कि तेंतीस देव अर्थात् पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से आठ वसु। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और जीवात्मा ये ग्यारह रुद्र इसलिये कहाते हैं कि जब शरीर को छोड़ते हैं तब रोदन कराने वाले होते हैं। संवत्सर के बारह महीने बारह आदित्य इसलिये हैं कि ये सब की आयु को लेते जाते हैं। बिजली का नाम इन्द्र इस हेतु से है कि ये सब की आयु को लेते जाते हैं। बिजली का नाम इन्द्र इस हेतु से है कि परम ऐश्वर्य का हेतु है। यज्ञ को प्रजापति कहने का कारण यह है कि जिससे वायु वृष्टि जल औषधि की शुद्धि, विद्वानों का सत्कार और नाना प्रकार की शिल्पविद्या से प्रजा का पालन होता है। ये तेंतीस पूर्वोक्त गुणों के योग से देव कहाते हैं। इन का स्वामी और सब से बड़ा होने से परमात्मा चौंतीसवां उपास्यदेव शतपथ के चौदहवें काण्ड में स्पष्ट लिखा है। इसी प्रकार अन्यत्र भी लिखा है। जो ये इन शास्त्रों को देखते तो वेदों में अनेक ईश्वर माननेरूप भ्रमजाल में गिरकर क्यों बहकते?।।१।।

हे मनुष्य! जो कुछ इस संसार में जगत् है उस सब में व्याप्त होकर जो नियन्ता है वह ईश्वर कहाता है। उस से डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायाचरणरूप धर्म से अपने आत्मा से आनन्द को भोग।।२।।

ईश्वर सब को उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! मैं ईश्वर सब के पूर्व विद्यमान सब जगत् का पति हूँ। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूं। मुझ ही को सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं वैसे पुकारें। मैं सब को सुख देनेहारे जगत् के लिए नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिए करता हूँ।।३।।

मैं परमैश्वर्य्यवान् सूर्य केसदृश सब जगत् का प्रकाशक हूं। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं। मैं ही जगत रूप धन का निर्माता हूं। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले मुझ ही को जानो। हे जीवो! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन्न को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।।४।।

हे मनुष्यों! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करनेवाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूँ। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करने हारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता उससे सब के ज्ञान को मैं बढ़ाता, मैं सत्पुरुष का प्रेरक यज्ञ करनेहारे को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है उस सब कार्य का बनाने और धारण करनेवाला हूं। इसलिये तुम लोग मुझ को छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो।।५।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

यह यजुर्वेद का मन्त्र है–

हे मुनष्यों! जो सृष्टि के पूर्व सब सूर्य्यादि तेजवाले लोकों का उत्पत्ति स्थान, आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ था, है और होगा उसका स्वामी था, है और होगा। वह पृथिवी से लेके सूर्य्य लोक पर्यन्त सृष्टि को बना के धारण कर रहा है। उस सुखस्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो।

प्रश्न– आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो परन्तु इसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो?

उत्तर– सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से।

प्रश्न– ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

उत्तर–इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यव– सायात्मकं प्रत्यक्षम्।।

यह गौतम महर्षिकृत न्यायदर्शन का सूत्र है।

जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु वह निर्भ्रम हो।

अब विचारना चाहिए कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उस का आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।

क्रमशः

धरोहर...

अद्वितीय सौम्यता के धनी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक—गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

फरवरी १९६६ की बात है गुरूकुल झज्जर रोहतक (हरियाणा) के स्वर्ण जयन्ती का पावन पर्व था मानो कुम्भ का मेला था स्वामी ओमानन्द जी महाराज (आचार्य भगवान् देव) के निमन्त्रण पर पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ वेदों के मनीषी संस्थापक गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर भी उसमें पूरे गुरूकुल सहित उपस्थित हुए थे मैं भी पूज्य स्वामी जी की सेवा में होने से यह सौभाग्य प्राप्त कर सका स्वामी जी के आशीर्वाद से इस महाकुम्भ में आर्य समाज के लगभग सभी महारथी देखने एवं सुनने का सौभाग्य मिला गुरूकुल के एक ओर खेतों में टेण्ट तम्बू लगे हुए थे जिनमें आवास की व्यवस्था थी कार्यक्रम चलते लोग बड़ी श्रद्धा से सुनते थे बड़ा उत्साह था जो मेरे जीवन को एवं मेरे जैसे हजारों बालकों एवं युवकों के लिए प्रेरणा श्रोत बनें वह कार्यक्रम था ब्र० इन्द्रदेव जी (स्वामी इन्द्रवेश) का आकर्षक चमत्कार व्यायाम प्रदर्शन गले से प्राणायाम द्वारा सरिया आँख से मोड़ना जंजीर तोड़ना एवं छाती पर पत्थर तुड़वाना लोहे की फाल को गर्म करके चटवाना आदि–आदि चमत्कारिक कार्यक्रम थे ने छोटा सा ही बालक था लेकिन आज भी सारा दृश्य ऐसा लग रहा है कि मानो अभी कल परसों की ही घटना हो बस घटना क्या थी हजारों की संख्या में बस एक ही चर्चा का विषय पूरे कार्यक्रम में रहा कि भाई ब्र० इन्द्रदेव में कोई अलौकिक शक्ति है कोई कहता *कि जादू है कोई कहता कि मंत्रों की शक्ति का* चमत्कार है तरह–तरह की चर्चायें लेकर लोग घरों को वापस आकर उनके प्रचार में लग गए और इसी जयन्ती से ब्र० इन्द्रदेव जी के मनोभाग्य जग गए, सितारा बुलन्दी की ओर भागने लगा और स्वामी जी के मन में नई दुनियां नए–नए सपने साकार करने की योजना बनने लगी। जो ब्रह्मचारी अभी कुछ दिन पूर्व अपने पारवार एवं ग्राम से ममता मोह का परित्याग कर सांसारिक बन्धनों से छूटकर भक्ति एवं साधना समाधि के मार्ग के पथिक बन गए थे आज बैठकर अपनी मित्रमण्डली के समाज सुधार के कार्यक्रम बना रहे हैं वे राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने के लिए एक राजनैतिक संगठन की योजना तैयार कर रहे हैं स्वामी जी मैदान साफ हो गया है आओं राष्ट की बागडोर सम्भालों पता नहीं क्यों तरह–तरह की कल्पनाओं में समय व्यतीत होता है स्वामी ओमानन्द जी के कार्यभार के हल्का कर दिया है ब्र० बलदेव जी ने अतः सोचा मैं क्यों न समाज सेवा से राष्ट्रसेवा के दायित्य को पूरा कर लूँ प्रो० श्यामराव जी कलकत्ता वाले (स्वामी अग्निवेश) भी संयोग से प्रभु ने इधर भेज दिये "चाह को मिल जाती है राह" श्री धर्मपाल सिंह जी जूवां वाले क्षेत्र के युवक आने वाले चुनाव में "आर्य राष्ट्र बनावेगें" युवकों की सेना बनाकर लालकिले पर ओ३म् का झण्डा फहराने के लिए कुरूक्षेत्र के मैदान से महाभारत की सेना सजाकर आर्यसेना चल पड़ी हाथ में मशाल लिए एक हाथ में ओ३म् का झण्डा बस संकल्प यही था कि आर्य" राष्ट्र बनायेगें" दयानन्द के दीवाने मस्ती भरे गीत गाकर मार्ग में युवकों को प्रेरणा देते और जनता को जागरूक करते कि अब समय आ गया है देश करवट लेना और दयानन्द के सपने साकार करेगा पत्र पत्रिकाओं में मुख्य समाचार बन गए सुर्खियों के समाचारों ने गुरूकुल में रहकर साधना करने वाले ब्र० इन्द्रदेव जी को राष्ट्रीय स्वरूप का नेता बना दिया जिधर भी जायें चर्चा केवल आर्यसभा की स्थापना युवकों का संगठन आर्यसेना के बलबले चर्चायें आर्य राष्ट्र की होने लगी लेकिन चौ० चरण सिंह पूर्व प्रधानमंत्री कहा करते थे कि राजनीति की कीचड़ अच्दे श्रेष्ठ लोगों को भी बदनाम कर देती है और आर्य समाज पतित व्यक्तियों को भी श्रेष्ठ बना देता है बस कुछ ऐसा ही लगा ये दयानन्द के सिपाही ही छलछद्म से रहित राजनीति के दांव पेंच को अच्छी तरह समझ सकें अथवा ये कहा जाये तो ज्यादा अच्छा है कि इन आर्यवीरों ने उस मार्ग का अवलम्बन नहीं किया जिसका आज के राजनेता करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं यथाराजा तथा प्रजा का आदर्श बनाना चाहते थे लेकिन यथा प्रजा तथा राजा के समाने वह सफल नहीं हो सका, स्वामी जी महाराज ने आर्य सामज में आई हुई निराशा को दूर कर एक नवीन चेतना प्रदान करने के लिए सक्रिय होकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष पद हेतु चुनाव लड़ने का मन बना लिया एक ओर स्वामी रामेश्वरानन्द जी (गुरूकुल झंज्जर) संघर्ष से पूर्व देखने में लग रहा था कि महाभारत का युद्ध कुरूक्षेत्र के मैदान में होने जा रहा है यह भी महाभारत सम्भवतया अम्बाला में हुआ दोनों ओर से सेनायें सजी खड़ी है लड़ाई प्रारम्भ होने से पूर्व महारथी अर्जुन ने अपने सभी गुरूजनों से आशीर्वाद लेकर "विजयीभव" को जैसे सार्थक किया था उसी प्रकार स्वामी इन्द्रवेश जी ने अर्जुन महारथी बनकर अपने गुरूतुल्य गुरू द्रोणाचार्य जी (स्वामी रामेश्वरनन्द) से आशीर्वाद लिया यह इनकी विनम्रता शालीनता का परिचायक था और स्वामी जी ने शायद मन ही मन आशीर्वाद देकर कहा होगा कि जाओ और युवाशक्ति के द्वारा आर्य समाज का नवनिर्माण करो स्वामी जी अध्यक्ष पर विजयी हुए और पूरे प्रदेश में एक क्रान्ति की लहर दौड़ गई युवाशक्ति ने आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प ही नहीं लिया अपितु हरयाणा पंजाब में आर्य केन्द्रीय युवक परिषद् गुरूकुल आर्यवीर दल आदि संस्थायें आगे बढ़ी गुरूकुल कांगड़ी में भी सुधारात्मक कदम उठाये गए आपका सर्व व्यापक प्रभाव हुआ है। जिसका परिणाम आपको रोहतक लोकसभा क्षेत्र से सांसद लोगों ने भारी बहुमत से बनाया और हरयाणा का नाम पूरे देश में गौरवान्वित हुा अपने कार्य करने की क्षमता और ऋषिवर एवं आर्य समाज के प्रति कितना समर्पण भाव था में केवल एक उदाहरण से ही आपको स्पष्ट करना चाहूंगा। आर्य गुरूकुल सिरसागंज मैनपुरी (उ०प्र०) में आपने कुछ काल तक रहकर आष्टाधायी महाभाष्य काशिक का गूढ़ अध्ययन पूज्य स्वामी महात्मा देवस्वामी जी आचार्य के चरणों में बैठकर किया है वहां पर कोई जयन्ती कार्यक्रम था मैं भी २ वर्ष वहाँ पढ़ा हूँ अतः मैं भी वहां स्नातक मण्डल के मंत्री होने के नाते से उपस्थित था स्वामी जी सांसद बनने के बाद वहां गए निरभिनी व्यक्तित्व ने रात्रि में जब अपना परिचय दिया कि मेरे से संसद में जब परिचय पूछा गया तो मैंने अन्य परिचय देने के बाद कहा कि मेरे में जो कुछ भी योग्यता है वह आचार्य देव स्वामी जी का आशीर्वाद एवं गुरूकुल सिरसागंज में पढ़ने का ही सुपरिणाम है। वहां इस बात पर जनता में इतना उत्साह पैदा हुआ कि बहुत देर तक तालियों की ध्वनि इन्द्रवेश जिन्दाबाद–जिन्दाबाद के नारे से लग रहा था कि आचार्य देवस्वामी जी की तपस्या तो एक प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द की तरह एक शिष्य स्वामी दयानन्द जी की तरह पूरी हुई थी इसी प्रकार स्वामी इन्द्रवेश को पाकर लोग प्रसन्नता में अपने उत्साह का वर्द्धन कर रहे थे और यह कहते सुना गया कि अब कोई स्नातक बने या न बने लेकिन सिरसागंज गुरूकुल तो एक इन्द्रवेश को पाकर ही धन्य हो गया है वातावरण बहुत भावुक था। लगता है अभी हम यहीं पर बैठे चर्चा कर रहें हैं उन दिनों स्वामी इन्द्रवेश जी को मैंने निकटता से देखा वैसे मै। बचपन से आज तक उनसे परिवार के सदस्य की तरह जुड़ा हुआ हूँ लेकिन कुछ क्षण विशेष होते हैं जो एक उदाहरण बन जाया करते हैं स्वामी जी नवम्बर मास में सप्ताह के लिए विशेष कार्यक्रम बनाया करते थे दीपावली के बाद अपने वाली गोपाष्टमी से लेकर पूर्णिमा तक की कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली और प्रेरणादायक होता था मुझे भी कई वर्षों तक इस पुण्य को प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है स्वामी जी जब दिल्ली से चलते थे तो उनकी गाड़ी में श्री जगवीर सिंह जी एडवोकेट, श्री प्रेमपाल जी शास्त्री, श्री वीरेन्द्र जी अथवा विरजानन्द जी पहलवान होते थे गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर आकर रात्रि में निवास करते और वहां से साधु आश्रम अलीगढ़ का सम्मेलन करके फिर बु० शहर होते हुए गढ़गंगा के मेले पर आर्य समाज एवं समाज सुधार संस्थाओं के मंचों पर बोलकर तिगरी मुरादाबाद के मेले में जाकर भाषण देते फिर कभी बिजनौर होकर कभी सीधे ही शुक्रताल गुरूकुल के सम्मेलन में जाकर भाषण देते देते थे और पूर्णिमा की यज्ञ वही करके वापस दिल्ली की ओर चलते थे में कभी मेरठ उतर जाता कभी गाजियाबाद से वापस आता था इस प्रकार कई वर्षों तक और जब तक सांसद रहे प्रायः प्रतिवर्ष हमें यह सौभाग्य मिला तथा सेवा करने का हमें गर्व है कि स्वामी जी ने हमें इस प्रकार की प्रेरणा दी जिसे जीवन में कभी भुलाया नहीं जा सकता उनका व्यवहार कितना मधुर चेहरे पर सौम्यता शालीनतास्वत आकर्षक होती थी बु० शहर मेरठ मुरादाबाद गा० बाद जिलों के कई ग्रामों में कई बार सम्मेलन में स्वामी जी को यज्ञ एवं सम्मेलन के लिए जब भी आमन्त्रित किया स्वामी जी प्रसन्नता पूर्वक आये आये और ग्राम्य वातावरण में आकर किसान लोगों में आर्य

शेष पृष्ठ ७ पर

ईश्वर और जीव का सम्बन्ध

– साभार

मुझमें और मेरी मेज में क्या भेद है? मेज एक निर्जीव पदार्थ है। इसे न गर्मी लगती है न सर्दी। मैं जानता हूँ कि मेज के ऊपर किताबें रख दो या उस पर सोना लाद दो या उस पर कूड़े का ढेर लगा दे, मेज के लिए यह सब एक–सा है। मेज सोना देखकर खुश व कूड़ा देखकर नाराज नहीं होती है। मैं उस पर बैठकर लिखूँ या मेरा कोई दोस्त दुश्मन। लेकिन मेरा हाल ऐसा नहीं हैं। मेरे लिए सोना और कूड़ा एक नहीं है। यह सुख, दुःख, प्रेम या द्वेष ही प्रकट करते हैं कि मुझ में जीव है, मेज में जीव नहीं है। यह जीव रहित या निर्जीव है।

मुझमें हर्ष के साथ उसे और बढ़ाने की और दुःखों को दूर करने की इच्छा भी होती है। मैं चाहता हूं, मेरा सुख नित्यप्रति बढ़े और दुःख कम हो जाएं। लेकिन मेज ऐसा नहीं करती। उसे सुख–दुःख से क्या प्रयोजन। संसार में कुछ चीज मेज की तुलना रखती है और कुछ मेरी। मिट्टी, ईंट, पत्थर, पहाड़, नदी आदि मेज तुल्य हैं। कुछ चीजें जैसे बिल्ली, चील, कौए, कुत्ता आदि इन्हें मेरे समान सुख–दुःख होता है। इसलिए हम मेज और उसके समान पदार्थों को जड़ और मनुष्य, पशु, पक्षी को चेतन या सजीव कहते हैं।

इन जड़ चेतन से अलग एक चीज है जो दोनों को वश में रखती है। यह नदियों को चलाती, पहाड़ बनाती, हवा चलाती है, सूरज निकलता है। ये हमें सुख–दुःख देती हैं। इसलिए उन्हें ब्रह्म या ईश्वर कहकर पुकारते हैं।

ईश्वर किसके समान है? ईश्वर मेज के समान जड़ नहीं है क्योंकि जड़ होता तो मेज के समान क्रियाशील ज्ञान–रहित होता। यदि उसमें ज्ञान नहीं होता तो ठीक समय पर सूरज कैसे निकालता, बादल कैसे बरसाता, वह हमें सुख–दुःख कैसे दे सकता था। इसलिए उसमें ज्ञान और प्रयत्न दोनों हैं। वह जानता और करता दोंनो है।

लेकिन ईश्वर को हमारे समान कभी दुख या सुख नहीं होता। किसी से मोह व किसी से घृणा नहीं करता। ईश्र मेज के समान सुख–दुःख, हर्ष, शोक से रहित है।

फिर भी यह नहीं समझना चाहिए कि वह मेज या मनुष्य हो गया। एक या दो बातों के समान होने से कोई वस्तुयें एक नहीं हो जातीं। कपास भी सफेद होती है, बर्फ भी सफेद होती है लेकिन सफेदी तो सिर्फ एक गुण है। यह जड़–चेतन दोनों पदार्थों से भिन्न होती है।

हमें सुख–दुःख, ईर्ष्या, द्वेष क्यों होता है? खाना न मिलने पर दुःख और खाने के मिलने पर सुख और जो पुरुष खाना देने में सहायता करते हैं उससे स्नेह, जो बाधा डालते हैं उनसे द्वेष क्यों करते है? इससे नतीजा यह निकला कि अच्छी वस्तु प्राप्त करने की कोशिश तो कर सकते हैं लेकिन समस्त सामग्री हमारे हाथ में नहीं है। हमारी शक्ति थोड़ी है हम परतन्त्र हैं।

हमारी परतन्त्रता व मेज की परतन्त्रता में अन्तर है। हम किसी अंश में स्वतन्त्र भी हैं। संसार के बहुत से पदार्थ हमारे वश में हैं। हम उन्हें एक सीमा के अन्दर बना या बिगाड़ सकते हैं। हम मिट्टी से घड़ा आदि व सोने से हार, कड़े बना सकते हैं। इसलिए यह कहना कि हम पूरी तरह परतन्त्र है, सर्वथा गलत है।

अपनी स्वतन्त्रता के कारण हमने सृष्टि में कितने परिवर्तन कर दिये। सृष्टि को ईश्वर जैसी बनाई हुई नहीं छोड़ते। उसने एक सीमा बांध दी है जिसमें हम मनमाने परिवर्तन कर सकते हैं। ईश्वर ने सूरज–चाँद बनाये। हमने उन्हें देखकर दीपक, लालटेन आदि बना लिए। ईश्वर ने नदियाँ बनाई, हमने नहरें निकलीं। ईश्वर ने तालाब बनाया, हमने घड़ा, शकोरा आदि बनाये। ईश्वर ने हमें कान दिये। उन्हें देख कर हमने ग्रामोफोन बनाये। यदि मनुष्य आदि प्राणियों के कार्यों का निरीक्षण करें तो पता चलता है कि वह ईश्वर के कामों को देखकर कुछ न कुछ करता है।

इस तरह तीन कोटियाँ हैं। पहला ईश्वर को सर्वथा स्वतन्त्र है। दूसरा मनुष्य प्राणी है जो कुछ अंशों में स्वतन्त्र है। तीसरा जड़ पदार्थ जो सर्वथा परतन्त्र है।

कुछ लोग समझने हैं कि मनुष्य प्रकृति के हाथ में खिलौना है। उसकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता, लेकिन यह बात ठीक नहीं है। यदि सर्वथा परतन्त्र होते तो किसी कार्य के उत्तरदाता न होते। अगर उत्तरदाता न होते तो वह सुख–दुःख क्यों देता। यदि पाप, पुण्य, भालाई–बुराई न रही तो उकस फल सुख– दुःख भी न होगा, इसलिये यह मानना चाहिये कि हम अपने काम में सर्वथा स्तन्त्र हैं, लेकिन फल पाने में सर्वथा परतन्त्र हैं। कर्म करने के बाद फल पाने का हमें अधिकार नहीं।

ईश्वर सर्वथा स्वतन्त्र है क्योंकि उसका कोई काम सुख–दुःख भोगने के लिए नहीं होता। जो निस्वार्थ काम करता है उसे फल भोगने की क्या चिन्ता, क्या परतन्त्रता? ईश्वर सारे काम जीवहित के लिए करता है। वह निष्क्रिय नहीं है लेकिन निष्काम अवश्य है। वह निरन्तर दूसरे के लिए काम करता है।

जीव अल्प–शक्ति वाले हैं लेकिन परमात्मा सर्व–शक्तिमान है। उसमें सबको अपने वश में करने की शक्ति है। यदि हममें कोई शक्ति न होती तो उसे सिर्फ शक्तिमान कहते।

ईश्वर एक दैव अनन्त है। सबका मालिक एक ही हो सकता है। वह अखण्ड और एक रस है। उसक टुकड़े नहीं हो सकते। टुकड़े कई चीजों से मिलने वाली एक चीज के होते हैं। जीव का ईश्वर का अंश कह सकते हैं। ईश्वर की तरह जीव भी चेतन है। उसकी चेतनता बड़ी व जीव की छोटी है। दोनों की अलग–अलग चेतनतायें हैं। यदि जीव में ईश्वर का अंश होता है तो दुःख, अज्ञान आदि अवगुण न होते।

कुछ लोग समझते हैं कि जीव ईश्वर की छायामात्र है। जैसे सूरज की छाया पानी में पड़कर चमकती है, लेकिन यह बात नहीं है। छाया पड़ने के लिए अपने से भिन्न कोई चीज चाहिए। सूरज की छाया जमीन के जल में तो पड़ सकती है लेकिन यदि सूरज में स्वयं जल हो तो उसमें सूरज की छाया नहीं पड़ेगी। ईश्वर सर्वव्यापक है, अतः उससे बाहर कोई चीज नहीं और उसकी छाया भी किसी पर नहीं पड़ सकती। इसलिए जीवन ही ईश्वर का अंश है न कि छाया।

फिर क्या जीव वस्तुतः ब्रह्म है? कदापि नहीं, जीव–जीव है। जीव ब्रह्म नहीं अगर वह ब्रह्म होता तो उसमें ब्रह्मत्व होता। उमें त्रुटियां, द्वेष, कलेश और अज्ञान न होता। कुछ लोग कहते है कि माया अथवा अन्य आवरण के कारण जीव अपने को अज्ञानी व दुःखी समझता है, लेकिन यह गलत है। पूर्ण ज्ञानी, सर्व–शक्तिमान तथा प्रकाश स्वरूप ब्रह्म का आवरण कौन छिपा सकता है। अल्प जीव के लिए उसकी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाना सम्भव है, लेकिन जिस ब्रह्म को उपनिषदों में सत्य, ज्ञान, अनन्त कहा गया है, वह किसी उपाधि से सीमित नहीं हो सकता। उसे कोई बुराई नहीं सता सकती।

ईश्वर हमारा माता–पिता तथा बन्धु है लेकिन उस प्रकार नहीं जैसे हमारे भौतिक माँ, बाप, भाई होते हैं? उसका तात्पर्य केवल उस प्रकम से है जो पिता–माता या भाई करते हैं।

वह सर्व–व्यापक है। वह अणु–परमाणु सबमें विद्यमान है। वह जीव के अन्दर है इसलिए अन्तर्यामी है। वह अन्तर्यामी ईश्वर हमारे सब कार्यों को जानता है, उसी के अनुकूल हमारी भलाई करता है। आकाश सब तत्वों में व्यापक है। इसी तरह ईश्वर समस्त जीवों और परमाणुओं में व्यापक है। उसकी व्यापकता में भौतिक नियम नहीं लग सकता।

जीव निर्बल है लेकिन ईश्वर के सहारे उसमें शक्ति आती है। जीव परतन्त्र है। जितना ईश्वर के सहारे वह रहता है उतनी ही उसमें स्वतन्त्रता आती है। लेकिन ईश्वर के सहारे वह रहता है उतनी ही उसमें स्वतन्त्रता आती है। लेकिन जीव को पुरूषार्थ छोड़कर ईश्वर का भरोसा नहीं करना चाहिए। ईश्वर जीव की केवल इतनी सहायता करता है कि उसे अपना पुरूषार्थ करने की सामग्री देता रहे, लेकिन जो पुरूषार्थ नहीं करता, ईश्वर उसकी सहायता भी नहीं करता। ईश्वर जीव को अपने हाथ का खिलौना नहीं बल्कि मित्र बनाना चाहता है। मित्र वह नहीं जो रोटी तोड़कर मुंह में देता है। बल्कि वह जो शक्ति बढ़ाने में ममद करे।

कुछ लोग समझते हैं कि जैसे राज, रईस, नबाब लोग उनसे खुश रहते हैं जो खुशामद में लगे रहते हैं, इसी तरह ईश्वर भी करता है। ये लोग ईश्वर की आज्ञा का पालन तो नहीं करते, लेकिन उसका नाम रटते हैं जिससे कोई फल नहीं मिलता। ईश्वर को कोई भी धोखा नहीं दे सकता है। ईश्वर ने सृष्टि अपने खुशामद के लिए नहीं बल्कि समस्त प्राणियों के लाभ तथा हित के लिए बनाई है। इसलिए अन्य जीवों के साथ भलाई करने में ईश्वर अवश्य प्रसन्न होगा।

कुछ लोग कहते हैं कि यदि ईश्वर खुशामदी नहीं तो उसकी खुशामद क्यों करें। यह भी भूल है। ईश्वर के गुणों का चिंतन करने से अपने में शुभ गुणों के लिए प्रेम पैदा होता है। इस प्रेम के द्वारा हम उन गुणों को अपने में धारण कर सकते हैं। उसकी उपासना से अपने में साहस बढ़ता है तथा हम पाप से बच सकते हैं।

हमें चाहिए कि हम ईश्वर पर विश्वास करें, उससे प्रेम कर उसका अनुकरण करें। जिस तरह ईश्वर निरन्तर कार्य करता है वैसे हम भी पुरूषार्थ करें। जैसे वह सब जीवों के हित के लिए काम करता है वैसे ही हम भी निस्वार्थ भाव से जीवहित के लिए उद्योग करें। यही ईश्वर की भक्ति का अर्थ है। यदि हम ऐसा करेंगे तो ईश्वर अवश्य हम पर कृपा करेगा और हम ईश्वर के बल तथा आनन्द दोनों के हिस्सेदार होंगे।

वैदिक साहित्य में विश्वकर्मा का स्थान

– आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

वैदिक वाङ्मय में विश्वकर्मा शब्द का व्यापक अर्थ है। यह शब्द गुणवाचक है व्यक्तिवाचक नहीं अतः इस शब्द से किसी निश्चित विश्वकर्मा का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान होता है। तद्यथा– सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा, शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता व सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता ऐतिहासिक महापुरुष विश्वकर्मा तथा सूर्य, वायु, अग्नि, पृथिवी व वाणी आदि जड़ चेतन रूप में अनेक विश्वर्मा हैं।

विश्वकर्मा वेद का शब्द है। यह वेद से लेकर ही लोक में प्रयुक्त हुआ। वेद के सभी शब्द यौगिक हैं अथवा योग रूढ़ि। किन्तु कोई भी शब्द वेद में रूढ़ि नहीं है। वेद के प्रत्येक शब्द का अर्थ उस शब्द के अन्दर ही निहित है उसे समझने के लिए हमें उस शब्द के अन्दर प्रविष्ट होना पड़ेगा। शब्द के अन्दर प्रविष्ट होकर उसके धातु, प्रत्यय का विभाग करके स्वाभाविक मूल अर्थ को जानने का नाम ही यौगिक प्रक्रिया है। वेदसम्मत इस यौगिक प्रक्रिया से शब्द का जो अर्थ जाना जाता है वह वास्तविक व अपरिमित होता है। इसके विपरीत वेद के शब्द लोक में प्रयुक्त होने पर जब अपने वास्तविक शब्द से हटकर किसी भी निश्चित किये गये अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं तब उन्हें रूढ़ि शब्द कहते हैं। उदाहरण के लिए एक लोक प्रसिद्ध शब्द पंकज का यौगिक अर्थ करने पर पंक अर्थात् कीचड़ में उत्पन्न होने वाले पौधे कमल आदि सभी का ग्रहण होता है किन्तु यदि यही पंकज नाम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का रख दें तो यह शब्द रूढ़ि ही कहलाएगा और अपने वास्तविक स्वाभाविक अर्थों को छोड़कर किसी निशिचित किए हुये व्यक्ति अथवा वस्तु के लिए संकुचित अर्थ में रूढ़ हो जायेगा। वेद का विश्वकर्मा शब्द किसी निश्चित विश्वकर्मा का वाचक न होकर यौगिक प्रक्रिया से अपने स्वाभाविक अर्थ द्वारा सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा व उसके द्वारा रचित, सूर्य, वायु, अग्नि आदि दैविक पदार्थों का बोध कराता है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में जैसे कोई वादित्र–बाजा बजाये या कठपुतली को चेष्टा कराये ठीक उसी प्रकार अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक चार ऋषियों को साधन बनाकर सब मनुष्यों के हितार्थ अपने ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का प्रकाश करता है। प्रभु वेदों का यह ज्ञान प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में ठीक इसी प्रकार का देता रहा है व सदैव देता रहेगा उसमें कभी किंचित् परिवर्तन नहीं करता। इस नित्य ज्ञान वेद में देश, काल आदि से सीमित किसी व्यक्ति, स्थान या इतिहास का वर्णन नहीं है। यदि वेद का ज्ञज्ञान सार्वकालिक, अनादि व अनन्त है और महापुरुष उत्त्पत्ति व मरणधर्मा हैं तो नित्य ज्ञान वेद में अनित्य महापुरुषों की कथा कैसे सम्भव है? अतः हमें दशरथनन्दन राम, योगिराज कृष्ण व शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा आदि महापुरूषों का मानवीय इतिहास इतिहासादि ग्रन्थों में ही ढूंढना चाहिये वेद में नहीं।

वेद के विश्वकर्मा शब्द से ज्ञान परमपिता परमात्मा, उसके द्वारा सूर्य, वायु, अग्नि आदि विश्वकर्मा व ऐतिहासिक महापुरुष शिप्लशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा ये समस्त ही विश्वकर्मा हमारे जिज्ञास्य हैं हम इन्हें का समुचित प्रयत्न करें। निरूक्तकार महर्षि यास्क विश्वकर्मा शब्द का यौगिक अर्थ लिखते हैं– " विश्वानि कर्माणि येन यस्य वा स विश्वकर्मा अथवा विश्वेषु कर्म यस्य वा स विश्वकर्मा, विश्वकर्मा सर्वस्य कर्ता" जगत् के सम्पूर्ण कर्म जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं अथवा सम्पूर्ण जगत् में जिसका कर्म है वह सब जगत् का कर्ता विश्वकर्मा है। विश्वकर्मा शब्द के इस यथार्थ अर्थ के आधार पर विविध कला कौशल के आविष्कारक यद्यपि अनेक विश्वकर्मा सिद्ध हो सकते हैं तथापि सर्वाधार सर्वकर्ता परमपिता परमात्मा ही सर्वप्रथम विश्कर्मा है। ऐतरेय ब्राह्मणग्रन्थ के मतानुसार 'प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभवत्'' प्रजापति परमेश्वर प्रजा को उत्पन्न करने से सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। वेद में परमेश्वर के विश्वकर्त्तत्व का अद्भुत व मनोरम चित्रण विश्वकर्मा नाम लेकर अनेक स्थानों पर किया गया है। सृष्टि का मुख्य निमित्त कारण परमात्मा ही है। वही सब सृष्टि को प्रकृति से बनाता है जीवात्मा नहीं। इस कारण सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमेश्वर है। परमेश्वर ने जगत् को बनाने की सामग्री प्रकृति से सृष्टि की रचना की है एतद्विषयक निम्नलिखित मन्त्र द्रष्टव्य है–

किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत्।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः।।

ऋ० १०/८१/२

अर्थात् जगत् को उत्पन्न करने में कौन सा अधिष्ठान था, इसे आरम्भ करने का कौन सा मूल उपादानकारण जगत् को बनाने की सामग्री थी कि जिससे विश्वकर्मा परमेश्वर ने भूमि और द्यौलोक को अत्यन्त कौशल से उत्पन्न किया। सर्वद्रष्टा परमेश्वर ही अपने महान् ज्ञानमय सामर्थ्य से प्रकृति को गति देकर विकसित करके सृष्टि की रचना करता है। उसके विश्वकर्मत्व को देखकर बड़े–बड़े विद्वान् आश्चर्य करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी परमेश्वर की सृष्टि रचना का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में निम्नलिखित शब्दों में करते हैं– "देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञान पूर्वक सृष्टि रची है कि विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप मूल रचन, लोम नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रथन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिये स्थानविशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है? इसके बिना नाना प्रकार के रत्नधातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार वटवृक्ष आदि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण चित्र मध्यरूपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, मूल, निर्माण, मिष्ट, क्षार कटुक, कषाय, तिक्त, अम्लादि विविध रस, सुगन्धादि युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्दमूलादि रचन, अनेकानेक क्रोड़ों भूगोल, सूर्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना आदि परमेश्वर के बिना कोई भी नहीं कर सकता।" इस प्रकार वेद व सृष्टि की रचना का अद्भुत सामर्थ्य केवल परमेश्वर का है इसलिए सर्वप्रथम विश्वकर्मा वहीं हैं। परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव होने से उसके विश्वकर्मा नाम की भांति सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता आदि अनन्त नाम हैं किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है यह ध्यान रखना चाहिए।

विश्वर्मा परमेश्वर ने जगत् में अनेक पदार्थ रचे हैं। उन पदार्थों में परमेश्वर ने जितने–जितने दिव्यगुण स्थापित किये हैं। उतने–उतने ही दिव्यगुण हैं, न उससे अधिक और न न्यून। उन दिव्य गुणों के द्वारा विश्व में अपना–अपना कर्म करने से अग्नि, सूर्य आदि जड़ पदार्थ भी विश्वकर्मा कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मणगन्थ में 'विश्वकर्मायमग्निः' वाक्य से अग्नि, को विश्वकर्मा कहा है। गोपथ में 'असौ वै विश्वर्मा योऽसौ सूर्यः तपति' कहकर विश्व को प्रकाशित करने के कर्म से सूर्य को विश्वकर्मा कहा है। वैदिक साहित्य में इसी प्रकार से वायु, पृथिवी व वाणी आदि तीनों लोकों के अनेक दैविक पदार्थों को विश्वकर्मा शब्द से व्यक्त किया गया है। हमें इन पदार्थों के दिव्य विश्वकर्मत्व को जानकर विद्या, विज्ञान की वृद्धि करनी चाहिये।

सृष्टि के आरम्भकाल में मनुष्य के पास नामकरण के कोष के रूप में केवल वेद थे। जिस प्रकार परमेश्वर ने सृष्टि के पदार्थों का नामकरण उनके गुण कर्मानुसार वेदों में प्रकट किया है तद्वत् मनुष्यों ने भी अपने, अपनी सन्तति व पदार्थों के नामकरण वेदों से ही शब्द ले किये हैं। महर्षि मनु जी का भी यही मन्तव्य है। इसी प्रकार का एक नाम प्राचीन इतिहास में विश्वकर्मा भी हैं। प्रतीत होता है कि अद्भुत कला कौशल्य के व्यवस्थापक विश्वकर्मा जी राजा इक्ष्वाकु के समय हुए थे। इसका दिग्दर्शन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अपने इतिहास विषयक आठवें पूना प्रवचन के निम्न शब्दों से होता है – "स्वायम्भुव मनु का पुत्र मारीचि यह प्रथम क्षत्रिय राजा हुआ। इसक पश्चात हिमालय के प्रदेश में छः क्षत्रिय राजाओं की परम्परा हुई। अनन्तर इक्ष्वाकु राजा हुआ। इसके पश्चात् हिमालय के प्रदेश में छः क्षत्रिय राजाओं की परम्परा हुई। अनन्तर इक्ष्वाकु राजा राज्य करने लगा। कला कौशल्य की व्यवस्था करने वाला विश्वकर्मा नामक एक पुरुष हुआ। विश्वकर्मा परमेश्वर का भी नाम है और एक शिल्पकार का भी था। अस्तु, विश्वकर्मा ने विमान की युक्ति निकाली। फिर इस विमान में बैठकर आर्य लोग इधर–उधर भ्रमण करने लगे।" मानव जाति के पूज्य शिल्प प्रजापति विश्वकर्मा जी शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता व ज्ञाता थे। भारत के वास्तुकला के ज्ञाता, शिप्लकला के विद्वान् पण्डित, इंजीनियर आदि इन्हें अपना आदर्श व शिल्पविद्याजगत् में अपना आदिपुरूष मानते हैं जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य है। वे विमान आदि की युक्ति निकाल कर शिल्पविद्या के प्रथम आविष्कारक बने। प्रतीत होता है कि तदनन्तर विश्वकर्मा शब्द उपाधि के रूप में प्रयुक्त होने लगा। जो नवीन–नवीन शिल्पविद्याओं के आविष्कारक महान् विद्वान् विशेष दक्ष होते थे वे विश्वकर्मा पदवी को धारण करते थे। लंका का निर्माण व पाण्डवों का सभागार विश्वकर्मारचित हैं किन्तु समय की दूरी से निश्चित ही ये विश्वकर्मा पृथक्–पृथक् हैं।

जिन भुवनपुत्र मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने विश्वकर्मा विषयक मन्त्रों का दर्शन करने पर अपना नाम भी तदनुरूप विश्वकर्मा भौवनः रख लिया वे मन्त्रदृष्टा ऋषि विश्वकर्मा, ऐतिहासिक शिल्पी विश्वकर्मा जी से पृथक् हैं।

इस प्रकार सृष्टि रचयिता विश्वकर्मा परमात्मा, उसके द्वारा रचित सूर्य आदि दैविक पदार्थ व ऐतिहासिक शिल्पी विश्वकर्मा को पृथक्–पृथक् समझते हुए शिल्पी विश्वकर्मा के कौशल से शिक्षा लेकर विद्वानों को जगत् में शिल्पविद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली

– स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
गुरूकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

भारत ही क्यों, इस समय सम्पूर्ण विश्व अपने परिवेश को परितः अशुद्ध एवं अपवित्र अनुभव कर रहा है। व्यक्ति, परिवार, अशुद्ध एवं अपवित्र अनुभव कर रहा है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, यहां तक कि सम्पूर्ण विश्व की शुद्धता, पवित्रता एवं सुरक्षा का दायित्व किसी न किसी प्रकार से सुशिक्षित वर्ग पर ही पड़ता है। व्यक्ति, विश्वादि को साकल्येन शुद्ध, पवित्र रखने के लिए यह आवश्यक है कि पहले सुशिक्षित वर्ग उपरोक्त गुणों से युक्त हो और सुशिक्षित वर्ग इन गुणों से समलंकृत हो। इसके लिए यह आवश्यक है कि जिन स्थानों पर इनका संसकार, परिष्कार, किया जा रहा हो अथवा जिस प्रणाली से इनका निर्माण, परिष्कार किया जा रहा हो, वह पद्धति ही इतनी की न्यूनता नहीं हो, जिससे इनके निर्माण में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हो। इनके निर्माण का स्थान कितना सुरक्षित, सुव्यवस्थित, सुपूर्ण हो तथा इसके कर्मचारी कितने जागरूक तथा सतर्क हों, इसके लिए अथर्ववेद में 'गर्भ' शब्द का प्रयोग किया गया है।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।

तं रात्रिस्तिस्र उदरे बिभर्त्ति तं जातं द्रष्टुमभिसन्ति देवाः।।

आचार्य अपने गर्भ में छात्र को धारण करता है। शिक्षार्थी की शिक्षा, दीक्षा, सुरक्षा किस प्रकार करनी चाहिए? इस बात को वेद ने केवल 'गर्भ' शब्द से स्पष्ट कर दिया है। वैदिक आचार्य के गर्भ को ही लोक में गुरूकुल कहते हैं और उस गर्भस्थ शिशु को ही लोक में गुरूकुल कहते हैं और उस गर्भस्थ शिशु का सर्वांगीण विकास जिस प्रणाली से होता है, उसे ही हम गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली कहते हैं। इस प्रणाली से शिक्षा ग्रहण करते हुए छात्र का विकास स्वतः ही हो जाता है। माता–पिता (विशेषकर माता) अपने गर्भस्थ शिशु का कितना ध्यान रखती है यह लिखने की आवश्यकता नहीं। माता के शरीर एवं उदर की नस–नाड़ियाँ जिस प्रकार गर्भस्थ शिशु को स्वतः ही सब कुछ प्रदान करती हैं, जिसकी आवश्यकता गर्भस्थ शिशु को होती है, उसी प्रकार आचार्य के परिसर में रहने वाले समस्त कर्मचारीगणरूपी नस–नाड़ियों के द्वारा स्वतः ही अपने परिवर्द्धन, संवर्द्धन, संरक्षण की वह सम्पूर्ण सामग्री परिसरस्थ (आचार्यगर्भस्थ) शिशु स्वयं ग्रहण करता है। जिस समय जिसकी उसे आवश्यकता होती है। इसके लिए पृथक् से उसे कोई व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। हां, इतना आवश्यक है कि आचार्य के गर्भ की नस–नाड़ियां सक्षम तथा नीरोग हों, जिससे आचार्य द्वारा प्रभुक्त (प्रदत्त) सामग्री शिशु को समय पर मिलती रहे। इसके लिए आचार्य की अहर्निश जागरूकता एवं पर्यवेक्षण अपरिहार्य है। अन्यथा सम्बन्धित नस–नाड़ियों के रूग्ण होने से गर्भस्थ शिशु का उचित विकास नहीं हो पायेगा और यह भी सम्भव है कि गर्भपात भी हो जाये, जो स्वयं आचार्य के स्वास्थ्य के लिए भी घातक सिद्ध होगा, जिससे मृत्यु भी हो सकती है। इस आचार्य के गर्भ–परिसर में रहते हुए छात्र स्वतः ही छात्रसंघों के चक्कर, राजनेताओं की टक्कर एवं कार्यालयों के लिपिकों के मक्कर से बचकर गुरूकुलों के द्वारा अजस्र प्रवाहित होती हुई सरस्वती सरिता में सतत निमज्जन करता रहता है और महर्षि चरक के ज्ञाननिर्देश का उसे अनायास ग्रहण करने का सुयोग प्राप्त होता रहता है।

तद्विद्य संभाषा बुद्धिविवर्धनानाम्।
–चरकसंहिता

ज्ञानसंवर्द्धन के सभी साधनों में तत्तद् विषयों के ज्ञाता विद्वानों से बातचीत करना सर्वश्रेष्ठ साधन है। मैं समझता हूं आचार्यकुल अथवा गुरूकुल के परिसर को आचार्य का उदर एवं उसमें दीक्षा ले रहे अध्येता छात्रों को गर्भस्थ शिशु कहकर वेद ने शिक्षा–विभाग की जो महत्ता दर्शायी है वह विश्व के किसी भी शिक्षाशास्त्री की सर्वोच्च कल्पना से भी परे है। वर्तमान शिक्षा–प्रणाली के दूषित होने का एकमात्र कारण यह है कि वह गुरू–केन्द्रित न होकर कार्यालय–केन्द्रित है। इस प्रकार हम आधुनिक शिक्षा–प्रणाली को कार्यालयीय शिक्षा–प्रणाली कह सकते हैं जिसमें छात्र का भविष्य गुरूओं के हाथ में न होकर कार्यालयों के हाथ में होता है। इसके सम्बन्ध में किसी प्रहसनकार ने अच्छा लिखा है–

अफसर करे न चाकरी दफ्तर करे न वर्क।
दास मलूका कह गये सब कुछ करता क्लर्क।।

इस प्रकार की प्रणाली से अनेक दोषों का समावेश इसके अन्दर हो गया है जिसका परिगणन कर लेने से उनको समझने में सुविधा रहेगी और गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली के गुणों को जानकर उनका समावेश इस शिक्षा–प्रणाली में किया जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा–प्रणाली के दोष–

सम्बन्धहीनता	अनात्मिकता
लक्ष्यहीनता	अध्रुवता
अनुशासनहीनता	सदाचारशून्यता
कृत्रिमता	कुटिलता
पदलिप्सा	कर्त्तव्यहीनता
केन्द्रहीनता	अहन्ता
अपूर्णता	असन्तोष

ये चौदह दोष मुख्य रूप से इस शिक्षा–प्रणाली में पाये जाते हैं। दूसरी ओर प्रचीन गुरूकुल शिक्षा में चतुर्दश रत्नभूत चौदह गुण पाये जाते हैं–

दृढ़–सम्बन्धता	आत्मीयता
लक्ष्य–स्पष्टता	ध्रुवता
अनुशासनप्रियता	सदाचारिता
यथार्थता	सरलता
परित्याग	कर्त्तव्यपरायणता
ध्रुवकेन्द्रता	समर्पणता
पूर्णता	सन्तोष

मैं समझता हूँ कि नाम से ही इनके अर्थों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ गया। इसको स्पष्ट करने के लिए किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता केवल यह है कि वेद के अनुसार अपने शिक्षणालयों का निर्माण करें और उनमें गुरूकुल जैसे वातावरण को उत्पन्न करें जिससे छात्र किसी भी विषय को सहज रूप में ग्रहण कर सकें।

कभी–कभी विद्वान् यह कहते हुए दिखाई देते हैं कि गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली में आधुनिक विषय भी जोड़ देने चाहिये। ऐसा प्रतीत होता है, ऐसे विद्वान् गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली एवं पाठविधि में कोई भेद नहीं कर पाते। वे भूल जाते हैं कि गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली का अर्थ है कि गुरूकुल में पढ़ाय जाने की पद्धित, न कि उसमें क्या–क्या पढ़ाया जाता है, इसकी विवेचना, जबकि पाठ्यक्रम का अर्थ है क्रमशः पढ़ाये जाने वाले विषयों की सूची। गुरूकुल–पद्धति एवं पाठ विधि शब्दों का मौलिक अर्थवेद है। गुरूकुल या आचार्यकुल का तो केवल इतना ही अर्थ है कि ज्ञानदाताओं का वह समूह, वह स्थान जहां जाकर शिक्षार्थी छात्र उनके परिवार का ही अपने आपको सदस्य अनुभव करें और उनके सुस्निग्ध वातावरण में परिवार की विद्या जिस प्रकार से आने वाली संतति में किंचित्मात्र ध्यान देने से ही संक्रमित हो जाती है, जिस प्रकार अच्छे मूर्तिकारों, कलाकारों की सन्तति उनकी विद्याओं को ग्रहण कर लेती है, उसी प्रकार गुरूकुलों में उन आचार्यों के सान्निध्य में रहने से छात्र अपनी अभिलषित विद्या को ग्रहण कर लेता है। बस इस सहज, स्वाभाविक, आत्मीयतापूर्ण शिक्षा ग्रहण करने की पद्धति का ही नाम गुरूकुलों में उन आचार्यों के सान्निध्य में रहने से छात्र अपनी अभिलषित विद्या को ग्रहण कर लेता है। बस इस सहज, स्वाभाविक, आत्मीयतापूर्ण विद्या को ग्रहण कर लेता है। बस इस सहज, स्वाभाविक, आत्मीयतापूर्ण शिक्षा ग्रहण करने की पद्धति का ही नाम गुरूकुल शिक्षा प्रणाली है। यही इस शिक्षा–पद्धति की विशेषता है। यदि इस प्रणाली का वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में समावेश कर दिया जाये तो वे समस्त विकार इससे स्वयं ही दूर हो जायेंगे जिनसे वर्तमान समाज संत्रस्त है।

गुरूकुल का आचार्य कूप स्वरूप है एवं छात्र क्षेत्र स्वरूप आचार्य–स्वरूप कूप से विद्यारूपी जल छात्र–रूपी क्षेत्र में निर्विघ्न तथा परिपूर्ण रूप से यथासमय पहुंच सके, इससे बाह्य वातावरणरूपी आघातों से अध्यापनरूपी प्रणालियों की दीवारें टूटकर इधर–उधर ज्ञान जल के बहने की आशंका नहीं रहती तथा असमय में आवश्यकता से अधिक ज्ञान–जल से छात्रों को पीड़ा भी नहीं होती। यही इस प्रणाली का वैशिष्ट् है।

अब इस शिक्षा–प्रणाली से आप किसी भी विषय का, चाहे गणित, विज्ञान या प्रायोगिक आधुनिक विषय हों या प्रचीन आयुर्वेद, चिकित्सा, शास्त्रादि हों, छात्र को सहज रूप से ही ज्ञान करा सकते हैं।

आर्य समाज डी ब्लाक मेरठ द्वारा बाढ़ पीड़ित निर्धन परिवारों की सहायता की गयी

बारिश की मार झेल रहे गन्दे नाले के किनारे निर्धन परिवार जिनकी झुग्गी झोपड़िया तेज बारिश में बह गयी थीं उनकी सुध लेना वाला कोई दयावान नहीं दिख रहा था जैसे ही नीरा तोमर आर्य जी को पता चला, तत्काल आर्य समाज के नवीन प्रसासक मुकेश आर्य जी से सम्पर्क साधा मुकेश जी अपने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर उन असाहय निर्धन परिवारों को आर्य समाज शास्त्री नगर डी ब्लाक मेरठ में ले आये और लगातार छः दिन तक एक परिवार की तरह आर्य समाज में सभी कार्यकर्ताओं ने बड़े तन्मयता के साथ उनकी सेवा की। और उनकी जरूरत की चीजें उपलब्ध कराया गया प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धीरज सिंह एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने प्रसाशक महोदय तथा मीरा तोमर आर्य जी की टीम की प्रसंसा करते हुए कहा आज ऐसे सेवा भावी कर्मठ कार्यकर्ताओं की अत्यधिक अवश्यकता है हम इस कार्य के लिए प्रशासक महोदय को हृदय से धन्यवाद देते और इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

इस सेवा कार्य में सूरज पाल जी, राजेन्द्र जिज्ञासु जी आचार्य रविन्द्र जी आचार्य धर्मवीर जी, आचार्य रणधीर जी एवं मीरा तोमर आर्या की टीम सेवा में लगी रही।

आर्य समाज (वेदमन्दिर)

१३ ब्लाक, गोविन्द नगर, कानपुर के तत्वावधान में आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ दिनांक ३० अगस्त से ३ सितम्बर २०१८ गुरूवार से सोमवार भाद्र पद कृष्णपक्ष चतुर्थी से अष्टमी विक्रमी संवत् २०७५ नित्य प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश का आयोजन किया गया है जिसमें आप सादर आमंत्रित है।

स्थान : आर्य समाज वेद मन्दिर, गोविन्द नगर

नौरंग सिंह,
प्रधान

संजय आर्य
प्रधान

शोक संवेदना

आर्य समाज हजरत पुर (काजीपुर) गोण्डा के प्रधान श्री मोहन लाल शर्मा जी का निधन दिनांक ३०.७.२०१८ को हो गया श्री मोहन लाल जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे आर्य समाज के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। सभा प्रधान जी एवं सभा मंत्री जी ने अपनी शोक संवेदना व्यक्त की, मोहन लाल जी आर्य का निधन आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें और परिवारी जनों को यह असहनीय दुःख सहने की क्षमता प्रदान करें। हम दिवगंत आत्मा को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

-कार्यकारी सम्पादक : हरीश कुमार शास्त्री

पृष्ठ ३ का शेष

इन्द्रवेश जी महाराज

सामज की चर्चा से उन्हें प्रभावित करते थे। गंगा स्नान पर गढ़मुक्तेश्वर में प्रचार कैम्प लगाया उसका भी बड़ा प्रभाव क्षेत्र में हुआ कुम्भ मेला हरिद्वार में पूरे मास तक पाखण्ड खण्डिनी पताका को लहराया और फिर तो कुम्भ इलाहाबाद आदि कई स्थानों पर जाकर लगता था कि आर्य समाज की भी कोई पहचान है आर्यसमाज में भी साधु महत्मा हैं युवा सन्यासी जब एक साथ चलते थे तो शोभा अलग ही प्रभावित होती थी अन्य साधुओं से अलग चिन्तन समाज सेवा कुरीति उन्मूलन एवं राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत विचारों से लगता था कि अपने वाला समय आर्य सामज में कुछ नई क्रान्ति को जन्म देकर इसका कायाकल्प करेगा। पर दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि अभी तक भी कोई स्थाई हल नहीं निकल पाया है। स्वामी इन्द्रवेश जी ने उ०प्र० के बिजनौर जनपद में स्वामी केवलानन्द निगमागम आश्रम द्वारा नगरगंज को केन्द्र बनाकर युवकों के निर्माण की वानप्रस्थ सन्यास आश्रम की योजना बनाई और प्रारम्भ किये गए कार्य को अभी ज्यादा समय नहीं हुआ था कि स्वामी जी का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया और आश्रम का भी खेल ढीला हो गया अब स्वामी ओमवेश जी अपना समय देकर सम्भाल रहे है दिल्ली माई जगवीर सिंह जी कार्यकलय देख रहे हैं जब पता चला कि स्वामी इन्द्रवेश जी का अभिनन्दन ग्रन्थ लिखा जा रहा है तो मैंने भी कुछ भाव इन पंक्तियों के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास किया क्योंकि स्वामी जी के विषय में आने वाला समाज जब मूल्यांकन करेगा तब पता चलेगा कि स्वामी जी का एक अध्याय आप में वेश प्रकरण के नाम से युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा प्रद रहेगा हमारे जैसे हजारों युवक आर्यसमाज को स्वामी जी ने समर्पित किये हैं जो सदैव आपकी यश पताका को फहराते रहेंगे।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा इलाहाबाद

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन दिनांक २९.०७.२०१८ दिन रविवार को आर्य समाज कटरा प्रयाग में डा० जय प्रकाश भारती निर्वाचन अधिकारी की देख-रेख में सम्पन्न हुआ, जिसमें मुख्य रूप से प्रधान-आचार्य राममूर्ति, मंत्री-श्री संतोष कुमार शास्त्री व कोषाध्यक्ष श्री शंकर प्रसाद के साथ अन्य पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

वृजरतन सुन्दर आर्य कन्या इण्टर कालेज सम्भल में अभिनन्दन समारोह पर सभा मंत्री एवं सभा प्रधान जी

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० सभा डॉ० धीरज सिंह एवं सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एक साथ आर्य कन्या कालेज सम्भल पहुचें वहां की समस्याओं को देखते हुए दो पक्षों की आपसी मतभेद तथा नाराजगी को दूर किया यह एक सुन्दर पहल रही सभा प्रधान जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज का हर कार्यकर्ता आर्य समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए हमें छोटी-मोटी बातों को भूलकर ऋषि मिशन में लग जाना चाहिए पद हो या न हो यह माने नहीं रखता हम ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं इस अवसर पर डॉ० अरविन्द कुमार जी को वृजरतन सुन्दर कन्या इण्टर कालेज सम्भल का प्रसाशक तथा दयानन्द बाल विद्या मन्दिर का प्रशासक श्री ज्ञानेन्द्र गांधी (सभा उप प्रधान) जी को बनाया गया और श्री साहु विजय पाल सरन जी, श्री सुशील भगत जी, एवं कमलेश गुप्ता जी पूर्व में जो इनके निश्कासन थे वे समाप्त किये गये सभी एक मत होकर इस सुन्दर पहल का तालियों के साथ जोरदार स्वागत किया शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्ति हुए।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा दुनिया का सबसे प्रभावशाली है गायत्री मंत्र

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. होवर्ड स्टिएनगेरिल ने दुनियाभर के मंत्र, भजन और मंगलाचरणों का अपनी शरीर विज्ञान की प्रयोगशाला में गहन परीक्षण करने के बाद गायत्री मंत्र को विश्व की सबसे प्रभावशाली प्रार्थना घोषित किया है। उन्होंने पाया कि गायत्री मंत्र प्रति सेकेण्ड 1,10,000 ध्वनि तरंगें उत्पन्न करता है, जो सभी भजनों में सबसे ज्यादा हैं। उन्होंने पाया कि गायत्री मंत्र में विभिन्न आवृत्तियों (फ्रीक्वेंसी) के मिश्रण से विशेष आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करने की क्षमता विद्यमान है।

- **हम्बर्ग विश्वविद्यालय ने गायत्री मंत्र के शरीर और मन पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोधकार्य आरम्भ कर दिये हैं।**

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य समाज के कार्यक्रमों की झलकियां

स्वामी सेवानन्द जी की पुण्य तिथि पर मिलक रामपुर में डॉ० धीरज सिंह जी

आर्य समाज सम्भल अभिनन्द समारोह में भाग लेते हुए सभा प्रधान जी

आर्य समाज मेरठ शास्त्री नगर में बाढ पीड़ितों की सहायता हेतु कैम्प लगाया गया

ओ३म्

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

तदनुसार कार्तिक कृ० १, २, ३, ४ विक्रमी सम्वत् २०७५

विश्व शान्ति यज्ञ, योग तथा सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर तपोनिष्ठ संन्यासियों एवं वैदिक विद्वानों के प्रेरणास्पद उद्बोधन एवं प्रवचन

लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली

निवेदक

सुरेश चन्द्र आर्य	महाशय धर्मपाल	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य
प्रधान	अध्यक्ष	मंत्री	सम्मेलन संयोजक
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा	स्वागत समिति	सा. आर्य प्रतिनिधि सभा	प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9824072509	+91 11 25937987	+91 9826655117	+91 9810061763

मिठाईलाल सिंह
परामर्शदाता
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

उप प्रधान : डॉ. राधकृष्ण वर्मा, आचार्य विजय पाल, सोमदत्त महाजन।
उपमन्त्री : वाचोनिधि आर्य, देवराज आर्य, प्रदीप आर्य, दयाराम बसैये।
कोषाध्यक्ष : श्री अनिल तनेजा ।

उप प्रधान : शिव कुमार मदान, ओम प्रकाश आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान। महामन्त्री : विनय आर्य
मन्त्री : अरुण प्रकाश वर्मा, सुखबीर सिंह आर्य, सुरेन्द्र आर्य, शिवशंकर गुप्ता, वीरेन्द्र सरदाना, सुरेशचन्द्र गुप्ता।
कोषाध्यक्ष : श्री विद्यामित्र दुकराल

संयोजक एवं व्यवस्था समिति के माननीय सदस्यगण

मा. रामपाल आर्य	उमेद शर्मा	सुदर्शन शर्मा	प्रेम भारद्वाज	मिठाईलाल सिंह	अरुण अबरोल	स्वामी धर्मानन्द	वीरेन्द्र पाण्डा
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा		आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब		आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई		आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा	
दीनदयाल गुप्त	जगदीश प्र. केडिया	सुरेशचन्द्र आर्य	हंसमुख परमार	आचार्य अंशुदेव	दीनानाथ वर्मा	राकेश चौहान	रविकान्त
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिम बंगाल		आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात		आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़		आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर	
डॉ. ब्रह्ममुनि	माधवराव देशपाण्डे	इन्द्र प्रकाश गांधी	प्रकाश आर्य	डॉ. धीरज आर्य	स्वामी धर्मेश्वरानन्द	विजय सिंह भाटी	सुधीर शर्मा
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	का. प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र		आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत		आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश		आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	
प्रबोध चन्द्र सूद	करमवीर सिंह	भारतभूषण त्रिपाठी	चन्द्रशेखर प्रसाद	सत्यवीर शास्त्री	अशोक यादव	रमाकान्त सिंघल	लोकेश आर्य
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश		आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड		आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र.व विदर्भ		आर्य प्रतिनिधि सभा असम	
सुभाष अष्टीकर	डॉ. वासुदेव राव	संजीव चौरसिया	व्यासनन्दन शास्त्री	धर्मपाल गुप्ता	जोगेन्द्र खट्टर	डॉ. धर्मतेजा, संयोजक	
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री	उप प्रधान	महामन्त्री	आ.प्र. व तेलंगाना अभियान समिति	
आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक		आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार		अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ			

श्री विवेक शिनॉय, संयोजक
केरल अभियान समिति

डॉ. धनञ्जय जोशी, संयोजक
तमिलनाडु अभियान समिति

सुरेश आर्य, संयोजक
अन्दमान निकोबार अभियान समिति

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

बाढ़ पीड़ितों को भोजन कराते हुए कार्यकर्ता गण

सत्य प्रकाश श्रीवास्तव जी भू-सम्पपत्ति अधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

भू-सम्पत्ति अधिष्ठाता आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० डा० एसपी श्रीवास्तव द्वारा भूसम्पितियों का निरीक्षण, गोण्डा, बलरामपुर, प्रतापगढ़, वजीरगंज, सुल्तानपुर, बाराबंकी का निरीक्षण और अनुशंसा परकर्तव्य निष्ठ, अनुशासित डॉ० धीरज सिंह द्वारा ३२ लोगों के नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज। डा० धीरज सिंह ने उ०प्र० की सभी प्रधान/मंन्त्री/अंतरंग सदस्यों/ प्रशासन से एसपी श्रीवास्तव की सुरक्षा और सहयोग करने कि अपील की हैं? किसी भी प्रकार से देवदयानन्द की सम्पत्तियों को बेचने वाले बक्से नहीं जावेगें।

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।